पढ़ने की संस्कृति का निर्माण
एक ग्रामीण स्कूल की सफलता की कहानी

मेलोडी खलखो

पढ़ना, न केवल सीखने के लिए होता है बल्कि आनन्द, मनोरंजन और अच्छा महसूस करने के लिए भी होता है। पढ़ना हमें नए शब्द और कौशल सिखाने में मदद करता है, हमें समालोचनात्मक रूप से सोचने के काबिल बनाता है, हमारे नज़रिए को चुनौती देता है, हमें नए दृष्टिकोण दिखाता है, हमारी कल्पना को ऊर्जा देता है, हमें जिज्ञासु बनाता है और हमें दुनिया की विभिन्न मान्यताओं और संस्कृतियों की खोजबीन करने के लिए प्रेरित करता है।

एकलव्य फ़ाउंडेशन[i] ने मध्य प्रदेश के पिपरिया विकासखण्ड के ग्रामीण इलाकों में स्थित कुछ शासकीय प्राथमिक स्कूलों और मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटरों (एमएलएसी)[ii] को बाल साहित्य की किताबों के सेट प्रदान किए। पहली से पाँचवीं कक्षा तक के लिए उपयुक्त इन सेटों में अलग-अलग प्रकाशकों जैसे एकलव्य प्रकाशन, प्रथम बुक्स, मुस्कान फ़ाउंडेशन और इकतारा के जुगनू प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हिन्दी व अँग्रेज़ी तथा द्विभाषिक कहानियों और कविताओं की चुनिन्दा किताबें शामिल थीं।

एमएलएसी टीम के हिस्से के रूप में हमने मध्य प्रदेश के पिपरिया विकासखण्ड के सिलारी गाँव के शासकीय प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों तथा वहाँ के समुदाय के बीच पढ़ने की संस्कृति विकसित करने के लिए पहल की।

विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए बाल मेला

शुरुआत में, एमएलएसी केन्द्र, एक वालंटियर के घर में चलाया जाता था, लेकिन अब यह वहाँ से हटकर शासकीय प्राथमिक स्कूल में आ गया है। हमारे काम के हिस्से के रूप में हमें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को और अधिक किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करना था। पढ़ने में रुचि पैदा करने के लिए पहली चीज़ जो हमने तय की थी वह थी बाल मेले का आयोजन, जिसमें सारी गतिविधियाँ किताबों और पढ़ने के इर्द-गिर्द योजनाबद्ध थीं।

हमने विभिन्न प्रकार की किताबें प्रदर्शित कीं जिनमें, बिग बुक (बड़ी किताबें), लघु कहानियाँ, पिक्चर बुक (सचित्र किताबें) और द्विभाषी किताबें शामिल थीं। विद्यार्थियों और शिक्षकों को इन्हें खुद से ही जानने-समझने के लिए छोड़ दिया गया। इसके साथ ही, हमने किताबों को ध्यान में रखते हुए कई गतिविधियाँ की। जैसे रीड अलाउड (ज़ोर से पढ़ना), अभिनय गीत, कहानी सुनना, किताबों पर बातचीत, कहानी लिखना, चित्र बनाना, अधूरी कहानियाँ पूरी करना, रोल प्ले, पिक्शनरी

चित्र-1 : *कहानी की किताब पढ़ने के बाद एक विद्यार्थी द्वारा बनाया गया चित्र।*

(Pictionary) और ख़ज़ाने की खोज आदि। गतिविधियों के दौरान, विद्यार्थियों और शिक्षकों ने कई सवाल पूछे। सभी बहुत ही उत्साहित लग रहे थे और सभी ने प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय रूप से भाग लिया। वैसे भी, ये गतिविधियाँ एमएलएसी में नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं।

मेले के बाद मेले में की गई गतिविधियों के सम्बन्ध में हमने शिक्षकों से बातचीत की। प्रत्येक गतिविधि के पीछे विचार क्या था और ये गतिविधियाँ सीखने और पढ़ने के प्रति प्रेम पैदा करने में कैसे मदद करती हैं। हमने अपने विचार साझा किए कि कैसे इन गतिविधियों की योजना बनाई जाती है, कैसे प्रत्येक गतिविधि के लिए उपयुक्त किताबें चुनी जाती हैं, और यह भी कि कैसे ख़ज़ाने की खोज जैसे खेल के लिए सुराग बनाए जाते हैं।

शिक्षक बहुत जिज्ञासु थे और सीखने की चाह भी रखते थे। उन्होंने बताया कि उन्हें स्कूल के लिए किताबें प्राप्त होती हैं लेकिन उन्हें नहीं पता कि उन्हें प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे किया जाए। विद्यार्थियों के पास बहुत सारी पाठ्यपुस्तकें और अभ्यास पुस्तिकाएँ हैं, जिनके कारण अन्य किताबें पढ़ने या उनकी खोजबीन करने के लिए समय नहीं मिल पाता है। साथ ही, यह समझ आया कि उनका मुख्य डर था कि अगर विद्यार्थी किताबों का सही ढंग से इस्तेमाल न करें और किताबें क्षतिग्रस्त हो जाएँ तो उन्हें प्रशासन को जवाब देना पड़ेगा। यह आख़िरी बिन्दु ही वह मुख्य कारण था जिसकी वजह से वे किताबें बक्से के बाहर नहीं निकालते थे और बच्चों को उन्हें उपयोग करने नहीं देना चाहते थे।

बच्चों द्वारा किताबों को क्षतिग्रस्त करने के परिणामों का जो डर था, हमें उससे निपटना था। लेकिन यह एक ही बार में सम्भव नहीं था। इसीलिए, हमने शिक्षकों से नियमित बातचीत करना शुरू की कि पढ़ने के फ़ायदे क्या हैं, और ये बच्चों के सीखने में कैसे सहायक होते हैं। स्कूल के दौरों के दौरान हमने शिक्षकों और प्रधान-शिक्षकों के साथ किताबों से जुड़ी और गतिविधियाँ करवाईं और उन्हें किताबों की विभिन्न शैलियों और श्रेणियों से भी परिचित कराया।

इन्हीं प्रयासों का नतीजा है कि अब जब मैं स्कूल जाती हूँ, तो मुझे शिक्षक किताबों की ऐसी गतिविधियाँ कराते नज़र आते हैं जो हमने पहले उनके साथ साझा की थीं। बच्चों द्वारा किताबों को ख़राब कर देने की चिन्ता में भी बदलाव आया है, जो पहले उन्हें बच्चों को किताबें पढ़ने की अनुमति देने से रोकती थी। अभी वे सब बाल साहित्य का आनन्द ले रहे हैं, प्रधान-शिक्षक ने तो बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना भी शुरू कर दिया है।

अब विद्यार्थी सक्रिय रूप से किताबों की अधिकांश गतिविधियों का संचालन करते हैं। उन्होंने किताबों को सही-सलामत रखने की ज़िम्मेदारी भी ले रखी है। उन्होंने 'किताबों का अस्पताल' बनाया है जहाँ फटी-पुरानी और क्षतिग्रस्त किताबों की मरम्मत की जा सके। उनके पास एक इश्यु (निर्गम) रजिस्टर है जहाँ वे किताबें देने के पहले सारे विवरण दर्ज करते हैं। उनके द्वारा बनाए गए चित्रों और लिखित रचनाओं को दीवारों पर लगा दिया गया है। बच्चों की शैक्षिक प्रगति, उनके आत्मविश्वास के स्तरों में वृद्धि और उनकी लिखित रचनाओं, विचारों व संवादों में बदले हुए दृष्टिकोण स्पष्ट नज़र आ रहे हैं। इनके अलावा, जब विद्यार्थी किताबें घर ले जाते हैं, तो उनके परिवार के सदस्यों को भी किताबें पढ़ने का मौक़ा मिलता है।

चित्र-2 : *ग्राम पंचायत, सिलारी में सामुदायिक रीडिंग मेला।*

समुदाय के लिए रीडिंग मेला

पढ़ने की संस्कृति को स्कूल से सिलारी गाँव के समुदाय तक विस्तार देने के लिए हमने विद्यार्थियों के माता-पिता को एक बैठक के लिए आमंत्रित किया। बैठक में हमने पढ़ने के महत्त्व पर चर्चा की; और पढ़ने की गतिविधियों की उन दैनिक योजनाओं को जो हम एमएलएसी में करते हैं, उनके उद्देश्यों और उनके परिणामों को साझा किया। इन गतिविधियों के फलस्वरूप बच्चों ने जो सीखें हासिल कीं और उनकी जो प्रगति हुई उसे भी हमने बच्चों के माता-पिता के साथ साझा किया।

जब हमने उनसे किताबों में उनकी रुचि के बारे में पूछा तो उनकी प्रतिक्रियाएँ थीं - (i) हमारी पढ़ने की रुचि है लेकिन किताबों तक पहुँच नहीं है; (ii) हम अनपढ़ लोग हैं, हमारे बच्चों को शिक्षा मिल रही है उतना ही पर्याप्त है; (iii) हम दिहाड़ी मज़दूर हैं, हमारे पास किताब पढ़ने का समय नहीं है या (iv) हमें किताबें पढ़ने का कोई उपयोग नज़र नहीं आता।

हमारे पास इन प्रश्नों के तैयार जवाब नहीं थे। हमने सिलारी गाँव के ग्राम पंचायत कार्यालय में "रीडिंग मेला" करने की योजना बनाई। इसमें बच्चों के माता-पिता सहित समुदाय के अन्य सदस्य जैसे सरपंच और सचिव भी शामिल हुए। हमने ऐसी कई पुस्तक गतिविधियाँ करने की योजनाएँ बनाई थीं जिनमें वे सब आसानी से जुड़ सकते थे। चूँकि इस क्षेत्र में बुन्देलखण्डी भाषा बोली जाती है, हमने रीड अलाउड के लिए मिज़बान चुनी, जो बुन्देलखण्डी लोक कथाओं का एक संग्रह है। एक और मज़ेदार गतिविधि "सहयोगात्मक कला" थी जहाँ सभी को ऐसा कोई चित्र बनाना था जो दूसरों के चित्रों से जुड़ाव रखता हो। हम देख पा रहे थे कि सभी इसका आनन्द ले रहे थे, चर्चाएँ कर रहे थे, सवाल पूछ रहे थे और किताबों की छानबीन कर रहे थे। मेले के अन्त में, हमने सभी से पूछा कि क्या वे किताबें घर ले जाकर पढ़ना चाहते हैं। इसके लिए किसी ने भी इच्छा ज़ाहिर नहीं की।

कुछ महीनों के बाद, बच्चों के माता-पिता के साथ बैठक के दौरान, हमने फिर से वही गतिविधियाँ कीं। इस बार, कुछ माता-पिता खुद से पूछने लगे कि क्या वे किताबें घर ले जा सकते हैं? यह सफलता का वह पल था, जिसका मुझे इन्तज़ार था! वर्तमान में, सिलारी गाँव में, एक छोटा सामुदायिक पुस्तकालय है जिसे वालंटियर संचालित करते हैं। समुदाय के लोग, वहाँ से नियमित रूप से किताबें ले जाते हैं और पढ़ते हैं।

भारी-भरकम पाठ्यक्रम को पूरा करने या बच्चों द्वारा किताबों को क्षतिग्रस्त करने की चिन्ताओं से लेकर पढ़ने की गतिविधियों को समझने और संचालित करने का प्रयास करने तक, शासकीय प्राथमिक स्कूल, सिलारी के शिक्षकों ने एक लम्बा सफर तय किया है। पुस्तकालयों का निर्माण करना, पढ़ने की संस्कृति निर्मित करने का पहला क़दम भर है। पढ़ने में रुचि बनाए रखने के लिए अन्य विभिन्न पहलों के माध्यम से पढ़ने की आदत बनाने के लिए समय और लगातार काम करने की आवश्यकता होती है।

टिप्पणियाँ :

[i]एकलव्य फ़ाउंडेशन भोपाल, मध्य प्रदेश में स्थित एक गैर-लाभकारी, गैर-सरकारी संगठन है जो नवाचारी शैक्षणिक कार्यक्रमों का विकास और फील्ड परीक्षण करता है।

[ii]मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम ज़िले के कुछ गाँवों में मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर (एमएलएसी) चलाए जाते हैं। इन्हें गाँव के ही वालंटियरों द्वारा स्कूल शुरू होने से पहले दो घण्टे के लिए चलाया जाता है। इसमें शैक्षणिक विषयों के साथ-साथ अन्य व्यावहारिक गतिविधियाँ, मनोरंजक खेल आदि भी आयोजित किए जाते हैं।

मेलोडी खलखो एकलव्य फ़ाउंडेशन में प्रोजेक्ट एसोसिएट के रूप में कार्यरत हैं। वह मध्य प्रदेश के पिपरिया विकासखण्ड में Holistic Initiate Towards Educational Change (HITEC) प्रोजेक्ट में काम करती हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से एमए किया है। उन्हें विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ बाल साहित्य पढ़ना अच्छा लगता है। उन्हें पेंटिंग करना व लिखना भी पसन्द है और उनकी प्रकृति शिक्षा में गहरी दिलचस्पी है। उनसे melody.xalxo18_mae@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : लेखिका ने स्वयं किया है। **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अफसाना पठान